नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की नमाज़ पहली तकबीर से सलाम तक

ये रिसाला इस्लामिक दावाअ सेन्टर रायपुर छत्तीसगढ़ की तरफ से हर उस शख्स के लिये पेश किया जा रहा है जो रसुलूल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की तरह नमाज पढ़ना पसंद करता है, चुनांच फरमाने नबवी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम है –

जिस तरह मुझे नमाज़ पढ़ते हुए देखते हो उसी तरह नमाज पढ़ो **(बुखारी)**

ग्यारह सहाबा रजि0 की गवाही

हज़रत अबू हुमैद साअ़दी रजि0 से रिवायत है कि उन्होन नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के दस सहाबा की जमाअत मे कहा कि मैं तुम सब से अधिक नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की नमाज़ के तरीके को जानता हूं । सहाबा रजि0 ने कहा: तो फिर हमारे सामने नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की नमाज बयान करो । अबू हुमैद ने कहा : जब अल्लाह के रसूल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम नमाज़ के लिये खड़े होते तो अपने दोनों हाथ कन्धो के बराबर उठाते, फिर तकबीर तहरीमा कहते, फिर कुरआन पढ़ते, फिर रूकूअ के लिये तकबीर कहते और अपने दोनो हाथो को कन्धों के बराबर उठातें । फिर रूकूअ़ करते और अपनी हथेलियाँ अपने घुटनों पर रखते । फिर रूकूअ के दौरान कमर सीधी करते, इसमें न अपना सर झुकाते और न बुलन्द करते (यानी पीठ और सर बराबर रखते) और फिर अपना सर रूकूअ से उठाते फिर कहते समि–अल्लाहु लि–मन् हमि–दह । फिर अपने दोनो हाथ उठाते यहां तक कि उन को अपने कन्धो के बराबर करते और (कौमे मे इतमिनान से) सीधे खड़े हो जाते, फिर अल्लाहू अकबर कहते । फिर ज़मीन की तरफ सज्दे के लिये झुकते और अपने दोनो हाथ अपने दोनो पहलुओं (रानो और ज़मीन) से दूर रखते और अपने दोनो पांव की उंगलियां खोलते (इस तरह की उंगिलयों के सिरे किब्ला की ओर होते) फिर अपना सर सज्दे से उठाते और अपना बायां पावं मोड़ते (यानी बिछा लेते) फिर उस पर बैठते और सीधे होते, यहां तक कि हर हड्डी अपने ठिकाने पर आ जाती (यानी इतमिनान से जल्सा में बैठते) फिर दूसरा सज्दा करते, फिर अल्लाहू अकरबर कहते और उठते और अपना बायां पांव मोड़ते, फिर उस पर बैठते और इतमिनान से करते यहां तक कि हर हड्डी अपने ठिकाने पर आ जाती (यानी इतमिनान से इस्तिराहत के जलसे मे बैठते)

फिर (दूसरी रकअत के लिये) खड़े हाते, फिर इसी तरह दूसरी रकअत मे करते । फिर जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो अल्लाहू अकबर कहते और अपने दोनो हाथ कन्धो के बराबर उठाते, जैसे नमाज के शुरू मे तकबीरे ऊला (पहली तकबीर) के समय किया था । फिर इसी तरह अपनी बाकी नमाज़ मे करते, यहां तक कि जब वह सजदा होता जिस के बाद सलाम है (यानी आखिरी रकअत का दूसरा सज्दा जिस के बाद बैठ कर तशहहुद, दुरूद और दुआ पढ़ कर सलाम फेरते है) अपना बायां पावं दायी पिंडली के नीचे से बाहर निकालते और बायीं ओर कूल्हे पर बैठते, फिर सलाम फेरते । यह सुन कर उन सहाबा ने कहा (ऐ अबू हुमैद साअदी) आप ने सच कहा अल्लाह के रसूल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम इसी तरह नमाज पढ़ा करते थे । **(अबू दाऊद किताबुस्सलात हदीस नं0 730, 963, तिर्मिजी किताबुस्सलात हदीस नं0 304, इसे इब्ने हिब्बान, तिर्मिजी और नौवी ने सहीह कहा**

है)

इस हदीस से बहुत सारी बाते मालूम होती है उन मे से एक यह है सहाबा रजि0 के नज़दीक नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के वफात तक रफायदैन मंसूख नहीं हुआ । और इस हदीस पर 11 सहाबा रजि0 ने अपनी मुहर लगायी और जिस हदीस को 3 सहाबा रिवायत करे वो मुतवातिर होती है इस हदीस की मजबूती का अंदाज खुद करे ।

नीयत

अल्लाह के रसूल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम फरमाते है :

आमालो का दारोमदार नियतों पर है **(बुखारी हदीस नं0 1, 54, 3639, 4898, 5070, 2520, 6689,6953, मुस्लिम किताबुल इमारति हदीस नं0 2907)**

इसलिये जरूरी है कि हम अपने सभी कामो मे पहले इखलास के साथ नियत कर लिया करें, हज़रत अबू हुरैरा रजि0 रिवायत करते है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया :-

एक शहीद अल्लाह के सामने कियामत के दिन लाया जाएगा, अल्लाह उस से पूछेगा कि तू ने क्या अमल किया वह कहेगा कि मैं तेरी राह मे लड़ कर शहीद हुआ । अल्लाह फरमाएगा तू झूठा है, बल्कि तू इसलिये लड़ा कि तुझे बहादुर कहा जाये पर तहकीक कहा गया यानी तेरी नियत दुनिया में पूरी हो गयी । अब मुझ से क्या चाहता है फिर मूंह के बल घसीट कर आग में डाल दिया जाएगा । इसी तरह एक आलिम जिस ने ईल्म को चर्चा की नियत से पढ़ा और पढ़ाया था । अल्लाह के सामने पेश हो कर जहन्नम में झोंक दिया जायेगा । फिर एक नाम के नीयत से सखावत करने वाले मालदार का भी यही अंजाम होगा ।**(मुस्लिम किताबुल इमारति, हदीस नं0 1905)**

नीयत चूंकि दिल से रिश्ता रखती है इसलिये ज़बान से अदा करने की ज़रूरत नहीं । और नियत का ज़बान से अदा करना अल्लाह के रसूल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की सुन्नत और सहाबा रजि0 के अमल से साबित नहीं है ।

इमाम इब्ने तैमिया रह0 फरमाते है कि अलफाज से नियत करना मुस्लिम उलमा मे से किसी के नज़दीक भी सुन्नत नहीं है । नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम आप के खुलफा ए राशेदीन और दीगर सहाबा रजि0 और न ही इस उम्मत के सल्फ (बुजुर्गो) और इमामो मे से किसी ने अलफाज से नीयत की । इबादत मे जैसे वुजू, गुस्ल, नमाज रोजा और ज़कात वगैरह मे जो नीयत वाजिब है, तमाम इमामों के नज़दीक बिला इख्तिलाफ उस का स्थान दिल है (अल फतावा अल कुबरा) इमाम इब्ने हुमाम और इब्ने कय्यिम भी इस को बिदअत कहते है ।

कुछ लोग रोज़ा रखने की दुआ, हज्ज के तलबिया और निकाह मे ईजाब व कुबूल से नमाज वाली राइज नियत करने की कोशिश करते है इस बारे मे कहना यह है कि रोज़े रखने की दुआ वाली हदीस जईफ है, इसलिये हुज्जत और दलील नही है । हज्ज के लिये तलबिया सहीह हदीसों से साबित है, इसलिये नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की पैरवी मे उसे कहना जरूरी है । मगर नमाज़ वाली मशहूर नीयत किसी हदीस मे नहीं है । रह

गया निकाह मे ईजाब और कुबूल का मस्अला तो चूंकि निकाह का रिश्ता बंदो के हुकूक से भी है और बन्दों के हुकूक मे महज नीयत से नहीं इकरार तहरीर और गवाही से मामलात तै पाते है जबकि नमाज मे तो बन्दा अपने रब के सामने खड़ा होता है जो तमाम नियतों को अच्छी तरह जानते वाला है, फिर वहां नीयत पढ़ने की क्या तुक है इसलिये मुसलमानों से इल्तेजा है कि वह इस बिदअत से निजात पाएं और सुन्नत के मुताबिक नमाज शुरू कर के रसूल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का सबूत दें ।

तकबीरे ऊला (पहली तकबीर)

किबला की तरफ मूंह करके अल्लाहू अकबर कहते हुये रफायदैन करे । यानी दोनों हाथो को कन्धो तक उठाये । हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि0 फरमाते है :–

मैने ने नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम को देखा कि आप ने नमाज़ की पहली तकबीर कही और अपने दोनों हाथ कन्धो तक उठाये । **(बुखारी, किताबुल अज़ान हदीस नं0 738)**

हाथ उठाते समय उंगलियां खुली रखे । न उंगिलयों के दर्मियान अधिक फासला करें, न उंगलियां मिलाए । **(अबू दावूद किताबुस्सलात, हदीस नं0 753– इसे इमाम हाकिम और हाफिज ज़हबी ने सहीह कहा है)**

अल्लाह के रसूल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम दोनो हाथ कन्धे तक उठाते **(बुखारी किताबुल अज़ान हदीस नं0 735, मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस नं0 391)**

अल्लाह के रसूल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम कभी–कभी हाथो को कानो तक बुलन्द फरमाते ।**(मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस नं0 391)**

शेख अल्बानी रह0 फरमाते है कि तकबीरे ऊला के वक्त हाथो से कानों को छूने की कोई दलील नहीं है । उन का छूना बिदअत है या वस्वसा । मस्नून तरीका हथेलियां कन्धो या कानों तक उठाना है । हाथ उठाने के स्थान में मर्द और महिला दोनो बराबर है । ऐसी कोई हदीस मौजूद नहीं । (मकबूल हदीस की चार बुनियादी किस्में है (1) सहीह लिज़ातिहि (2) सहीह लिग़ैरिही (3) हसन लिज़ातिही (4) हसन लिग़ैरिही । लेकिन जब कोई इमाम इस तरह कहे कि फला मस्अला मे कोई सहीह हदीस नहीं है तो यह एक मुहावरा होता है । इस का यह मतलब नहीं होता कि सहीह हदीस तो नहीं, अलबत्ता हसन हदीस मौजूद है, बल्कि इस का यह मतलब होता है कि (उस के नज़दीक) इस मसअला मे किसी तरह की मकबूल हदीस नहीं आयी है । (रफीकी)

सीने पर हाथ बांधना

हज़रत वाईल बिन हुज्र रजि0 कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी, तो आपने दाएं हाथ को बायें हाथ पर रख कर सीने पर बांधे । **(इब्ने खुजैमा हदीस न0 479 इसे इमाम इब्ने खुजैमा ने सहीह कहा है)**

हज़रत वाईल बिन हुज्र रजि0 नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की नमाज का तरीका बयान करते हुये फरमाते है कि आप ने दाये हाथ को बायें हाथ की हथेली (पुश्त पर) उस के जोड़ और कलाई पर रखा ।**(नसई हदीस नं0 490, इसे इब्ने हिब्बान, इब्ने खुजैमा ने सहीह कहा है)**

हजरत सहल बिन सअद रजि0 से रिवायत है कि लोगो को अल्लाह के रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की तरफ से यह हुक्म दिया जाता था कि नमाज़ मे दायां हाथ बायीं कलाई (ज़राअ़) पर रखे ।**(बुखारी किताबुल अजान, हदीस नं0 740)**

बुखारी की इस हदीस के बाद और किसी वजाहत की जरूरत तो है नहीं फिर भी जान ले कि ज़राअ़ का अरबी लुगत मे जो मतलब होता है वह कलाई से लेकर कोहनी तक का हिस्सा कहलाता है अगर इस तरह दायां हाथ बायें हाथ के ऊपर रखा जाय तो वह किसी भी सुरत मे नाफ के नीचे जायेगा ही नहीं ।

नाफ के नीचे हाथ बांधने की हदीस जईफ है

हज़रत अली की रिवायत कि सुन्नत यह है कि हथेली को हथेली पर नाफ के नीचे रखा जाये । **(अबू दाऊद किताबुस्सलात हदीस नं0 756,** इसे इमाम बैहकी और हाफिज इब्ने हजर ने जईफ कहा है । और इमाम नौवी फरमाते हैं कि इसके जईफ होने पर सब का इत्तिफाक है ।

मर्द और औरत की नमाज़ मे कोई फर्क नहीं है

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया :-

नमाज उसी तरह पढ़ो जिस तरह तुम मुझे पढ़ते हुये देखते हो **(बुखारी किताबुल अजान 231)**

यानी हूबहू मेरे तरीके के मुताबिक नमाज तमाम औरते और तमाम मर्द नमाज़ पढ़े । फिर अपनी ओर से यह हुक्म लगाना कि औरते सीने पर हाथ बांधे और मर्द नाफ के नीचे । और इसी प्रकार औरते सज्दा करते समय ज़मीन पर कोई और तरीका इख्तियार करें और मर्द कोई और --- यह दीन मे दख्लअन्दाज़ी है । याद रखे तकबीर तहरीमा से शुरू कर के अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि कहने तक औरते और मर्दो के लिये एक तरीका और एक ही हालत की नमाज़ है । सब का कियाम रुकूअ, कौमा सज्दा जलसा-ए-इस्तिराहत, कादा और हर हर जगह पर पढ़ने की दुआयें एक सी है । अल्लाह के रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने औरत और मर्द की नमाज़ के तरीके में कोई फर्क नहीं बताया ।

सीने पर हाथ बांध कर ये सना पढ़े

١ -”اَللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ خَطَايَایَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ، اَللّٰهُمَّ نَقِّنِیْ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْاَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ، اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَایَ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ“

अल्लाहुम्मा बाईद बैयनि व बयना खतायया कमा बाअदता बयनल मशरिक व मगरिब, अल्लाहुम्मा नक्किनी मिनल खतायया कमा युनक्कस सौबल अबयाज़ु मिनद् दनासि, अल्लाहुम्मग सिलनी मिन खतायया बिल माए वस सलजे वल बरद । **(बुखारी हदीस नं0 744, मुस्लिम हदीस नं0 598)**

तर्जुमा : ऐ अल्लाह तु मेरे और मेरे गुनाहो के बीच दूरी पैदा कर दे, जैसे तुने मगरिब और मशरिक के दरमियान दूरी पैदा की है, ऐ अल्लाह तु मुझे मेरे गुनाहो से साफ सुथरा कर दे, जैसे सफेद कपड़ा गंदगी से साफ सुथरा किया जाता है, ऐ अल्लाह तु पानी, बरफ और ओलो के के जरिए मुझे मेरे गुनाहो से धो दे । (ये रिवायत सहीह है)

और अगर चाहे तो ये दुआ पढ़े :–

"سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ۔"

सुब्हाना कल्ला हुम्मा व बेहम्द का व तबाराह कसमो का व तअला जद्दो का वला इलाहा गैरूका

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह तु अपनी तारीफ के साथ हर तरह के ऐब से पाक है, तेरा नाम बा बरकत है, तेरी शान बुलन्द व बरतर है, और तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं । **(तिर्मिजी हदीस नं0 243, अबू दाऊद हदीस नं0 775, 776, ये रिवायत हसन है)**

सुरह फातिहा और दीगर मसअले

फिर ताऊज और तस्मिया पढ़ कर सुरह फातेहा पढ़े, क्योकि अल्लाह के रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया :–

जिस ने सुरह फातिहा नहीं पढ़ी उस की नमाज़ नहीं । **(बुखारी किताबुल अजान हदीस नं0 156, मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस नं0 394)**

इस हदीस से मालूम हुआ कि जो शख्स भी नमाज़ मे हो अकेला हो या जमाअत के साथ, इमाम हो या मुक्तदी मुकीम हो या मुसाफिर फर्ज पढ़ रहा हो या नफल, इमाम सूरह फातिहा पढ़ रहा हो या कोई और सूरत, बुलंद आवाज से पढ़ रहा हो या आहिस्ता से अगर उसे सूरह फातिहा पढ़ना आती है और फिर भी न पढ़ेग तो उस की नमाज नहीं होगी । इस मस्अला की तफसील रूकूअ के बयान मे आयेगी, इंशाअल्लाह (रफीकी)

हज़रत उबादा बिन सामित रजि0 रिवायत करते हैं कि हम फज्र की नमाज़ नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के पीछे पढ़ते थे । आप ने कुरआन पढ़ा तो आप पर पढ़ना भारी हो गया । जब नमाज़ से फारिग़ हुये तो फरमाया – शायद तुम अपने इमाम के पीछे पढ़ा करते हो हम ने कहा जी हां अल्लाह के रसूल आप ने फरमाया

सूरह फातिहा के अलावा और कुछ न पढ़ा करो, क्योकि उस शख्स की नमाज़ नहीं होती जो सूरह फातिहा न पढ़े **(अबू दाऊद किताबुस्सलात हदीस नं0 823, तिर्मिजी किताबुस्सलात हदीस नं0 311 इसे इब्ने खुजैमा, इब्ने हिब्बान और बैहकी ने सहीह जबकि इमाम तिर्मिजी और दारूकुतनी ने हसन कहा है ।)**

एक रिवायत मे यह भी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मै अपने दिल मे कहता था कि कुरआन का पढ़ना मुझ पर कठिन क्यों हो रहा है फिर मैं ने जान लिया कि तुम्हारे पढ़ने की वजह से मुश्किल हुआ । पस जब मैं पुकार कर पढूं (जेहरी नमाज़ मे) तो कुरआन से सूरह फातिहा के अलावा कुछ भी न पढ़ो । **(अबू दाऊद किताबुस्सलात हदीस नं0 844, दारूकुतनी ने हसन और बैहकी ने इसे सहीह कहा है)**

हज़रत अबू हुरैरा रजि0 बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिस शख्स ने नमाज़ पढ़ी और उस मे सूरह फातिहा न पढ़ी तो वह नमाज़ नाकिस है, नाकिस है, नाकिस है पूरी नहीं । अबू हुरैरा रजि0 से पूछा गया हम इमाम के पीछे होते है फिर भी पढ़े यह सुन कर उन्होने कहा जी हां तुम उस को दिल मे पढ़ो । **(मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस नं0 395)**

हज़रत अनस रजि0 फरमाते है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को नमाज़ पढ़ाई । जब नमाज़ पढ़ चुके तो उनकी तरफ तवज्जुह कर के पूछा – क्या तुम अपनी नमाज़ मे इमाम की किरात के दौरान में भी पढ़ते हो सब चुपचाप रहे । आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऐसा न करो तुम केवल सूरह फातिहा दिल मे पढ़ लिया करो । **(इब्ने हिब्बान हदीस नं0 152, 162 इब्ने हजर ने हसन कहा है)**

आमीन का मसअला

जब आप अकेले नमाज़ पढ़ रहे हो तो आमीन आहिस्ता कहे जब जुहर और असर इमाम के पीछे पढ़े तो फिर भी आहिस्ता कहे । लेकिन जब आम जेहरी नमाज़ मे इमाम के पीछे हो तो जिस समय इमाम व–लज़्ज़ालीन कहे तो आप को ऊंची आवाज से आमीन कहनी चाहिये । बल्कि इमाम भी सुन्नत की पैरवी मे आमीन पुकार कर कहे और मुक्तदियों को इमाम के आमीन शुरू करने के बाद आमीन कहनी चाहिये । (यानी आमीन पहले इमाम कहेगा । उस की आवाज़ सुनते ही तमाम मुक्तदी भी आमीन कहेंगे । इमाम से पहले या बाद मे ऊंची आवाज़ से आमीन कहना दुरूसत नहीं है लेकिन अगर इमाम बुलन्द आवाज़ से आमीन न कहे तो मुक्तदी को बहरहाल आमीन कहनी चाहिये । क्योकि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम का हुक्म इमाम के हुक्म पर मुकद्दम है ।

हज़रत वाईल बिन हुज्र रजि0 रिवायत करते है कि मैंने सुना नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने पढ़ा गैरिल मग़ज़ूबि अ़लैहिम व–लज़्ज़ालीन फिर आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने बुलंद आवाज से आमीन कही । **(तिर्मिजी किताबुस्सलात हदीस नं0 248, अबू दाऊद किताबुस्सलात हदीस नं0 932 इमाम तिर्मिजी ने हसन और दारूकुतनी ने सहीह कहा है)**

हज़रत अबू हुरैरा रजि0 ने फरमाया कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो जिस की आमीन फरिश्तों की आमीन के मुवाफिक हो गयी तो उस के सब गुनाह माफ कर दिये जाते है । **(बुखारी किताबुल अजान हदीस नं0 780, मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस नं0 410)**

इस हदीस से मालूम हुआ कि जिस मुक्तदी ने अभी सूरह फातिहा शुरू या खत्म नहीं की वह भी आमीन कहने मे दसूरों के साथ शरीक होगा, ताकि उसे भी किये हुये गुनाहों की माफी मिल जाये। बाद मे वह अपनी फातिहा मुकम्मल कर के दोबारा आहिस्ता से आमीन कहेगा (रफीकी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि0 और उन के मुक्तदी इतनी ऊंची आवाज से आमीन कहा करते थे कि मस्जिद गूंज उठती थी। **(बुखारी –तालीकन 2/266 इमाम बुखारी ने इस पर इतमिनान का इज़हार किया है जो इस के सहीह होने की दलील है।)**

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया – यहूदी जितना आमीन और सलाम से चिढ़ते है उतना किसी और चीज़ से नहीं चिढ़ते। पस तुम ज्यादा आमीन कहना। **(इब्ने माजा हदीस नं0 856 इब्ने खुजैमा और बूसीरी ने सहीह कहा है)**

और सुरह फातिहा के बाद जो सुरह पढ़नी आसान हो उसे पढ़े।

रूकूअ और रफायदैन

रूकूअ मे जाते समय अल्लाहु अकबर कह कर दोनो हाथ कंधो तक उठाये। जैसा कि इब्ने उमर रजि0 ने बयान किया –

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम जब रूकूअ के लिये तकबीर कहते तब भी अपने दोनो हाथ कंधो तक उठाते थे।**(बुखारी सिफतिस्सलात हदीस नं0 735, 736, 738, मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस नं0 390)**

रफायदैन चार जगहो पर साबित है (1) नमाज के शुरू मे तकबीरे तहरीमा के समय (2) रूकूअ से पहले (3) रूकूअ के बाद (4) तीसरी रकअत के शुरू में

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि0 फरमाते है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम शुरू नमाज मे रूकूअ से पहले और रूकूअ के बाद अपने दोनो हाथ कंधो तक उठाया करते थे। **(बुखारी सिफतिस्सलात हदीस नं0 735, 736,738, मुस्लिम 390)**

इमाम बुखारी के उस्ताद अली बिन मदनी रह0 फरमाते है कि इब्ने उमर रजि0 की हदीस की बुनियाद पर मुसलमानों पर रफायदैन करना जरूरी है।

हज़रत मालिक बिन हुवैरिस रजि0 नमाज के शुरू मे रफायदैन करते थे, फिर जब रूकूअ करते तो रफायदैन करते, और जब रूकूअ से सर उठाते तो रफायदैन करते और यह फरमाते थे कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम भी इसी तरह किया करते थे। **(बुखारी 737, मुस्लिम 391)**

इमाम इब्ने खुजैमा अबु साअदी रजि0 की हदीस को रिवायत करने के बाद फरमाते है कि मैने मुहम्मद बिन यहया को यह कहते सुना कि जो शख्स अबू हुमैद की हदीस सुनने के बावजूद रूकूअ मे जाते और उस से सर उठाते समय रफायदैन नहीं करता तो उसकी नमाज़ नाक़िस होगी । **(सहीह इब्ने खुजैमा 1/298, हदीस नं0 588)**

रूकूअ मे पीठ बिल्कुल सीधी रखे और सर को पीठ के बराबर यानी सर न तो ऊंचा हो और ना नीचा । और दोनो हाथो की हथेलियां दोनो घुटनों पर रखे । **(बुखारी सिफतिस्सलात हदीस नं0 735, 736, 738, मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस नं0 498)**

दोनो हाथो की उंगलियां कुशादा (खोल कर) रखे **(अबू दाऊद किताबुस्सलात हदीस नं0 731, इमाम हाकिम और ज़हबी ने इसे सहीह कहा है)**

दोनो हाथो (बाजुओं को तान कर रखे) ज़रा भी टेढ़पन न हो, उंगलियों के दर्मियान फासला हो और घुटनों को मज़बूती से थामे । **(अबू दाऊद किताबुस्सलात, हदीस नं0 731,735, तिर्मिजी और नौवी ने सहीह कहा है ।)**

रूकूअ की दुआये

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने रूकूअ मे तीन बार सुब्हान रब्बि–यल अज़ीम कहा, उस का रूकूअ पूरा हो गया । मगर यह कम से कम अदद है । **(अबू दाऊद, इब्ने माजा, इसे इब्ने खुजैमा और इब्ने हिब्बान से सहीह कहा है)**

इसके अलावा नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम रूकूअ मे सुब्हान रब्बियल अज़ीम के बाद और भी दुआये पढ़ते जो सहीह अहादीस से साबित है मुलाहिज़ा हो और सुन्नत की पैरवी के लिये उसे भी पढ़ा जाये ताकि हमारा रूकूअ भी नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के जैसा तवील हो इंशाअल्लाह

हज़रत आयशा रजि0 रिवायत करती है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम अपने रूकूअ और सज्दे मे यह कहते थे :–

"سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ"

"سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوْحِ"

सुब्हान कल्ला हुम्मा रब्बना व बेहम्देका–ला हुम्मग फिरली

सुब्बूहून कुद्दूस रब्बुल मलाईकति वर्रुह

तर्जुमा :– ऐ हमारे पालन हार अल्लाह तू पाक है हम तेरी तारीफ करते है ऐ मेरे मौला मुझे बख्श दे । फरिश्तो और रूह (जिब्रील) का रब निहायत पाक है । **(मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस नं0 487, अबू दाऊद हदीस नं0 872)**

इतमिनान नमाज़ का रुक्न (भाग) है

हज़रत अबू हुरैरा रजि0 से रिवायत है कि एक शख्स मस्जिद में दाखिल हुआ उस वक्त नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम मस्जिद के कोने मे बैठे हुये थे उस ने नमाज़ पढ़ी (और रुकूअ, सजदे, जलसे वगैरह का ख्याल न करके जल्दी जल्दी नमाज़ पढ़ी) और आप की खिदमत मे हाज़िर हुआ और सलाम किया आप ने फरमाया व–अलैकुम अस्सलामु वापस जाओ फिर नमाज़ पढ़ो इसलिये कि तुम ने नमाज़ नहीं पढ़ी चुनांचे वह गये फिर नमाज़ पढ़ी (उसी तरह जिस तरह पहले पढ़ी थी) फिर वापस आ कर सलाम किया आपने फिर फरमाया व–अलैकुम अस्सलामु जाओ फिर नमाज़ पढ़ो क्योकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी उन्होने तीसरी या चौथी बार पहले ही की तरह नमाज़ पढ़ने के बाद अर्ज किया आप मुझे नमाज़ पढ़ने का सहीह तरीका सिखा दे आप ने फरमाया :–

जब तुम नमाज के इरादे से उठो तो पहले अच्छी तरह वुजू कर लो, फिर किब्ला की तरफ खड़े होकर तकबीरे तहरीमा कहो फिर कुरआन मे से जो तुम्हारे लिये आसान हो पढ़ो फिर रुकूअ करो यहां तक कि इत्मीनान से रुकूअ करो फिर सर उठा लो, यहां तक कि (कौमा मे) सीधे खड़े हो जाओ, फिर सज्दा करो यहां तक कि इत्मीनान से सज्दा मुकम्मल करो फिर इत्मीनान से अपना सर उठा लो और (जलसा मे) बैठ जाओ, फिर सज्दा करो यहां तक कि इत्मीनान से सज्दा पूरा करो फिर सज्दे से अपना सर उठाओ और दूसरी रकअत के लिये सीधे खड़े हो जाओ, फिर इस तरह अपनी तमाम नमाज़ पूरी करो **(बुखारी सिफतिस्सलात हदीस नं0 793, मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस नं0 397)**

इस हदीस मे जिस नमाज़ी का बयान है वह रुकूअ और सजदे बहुत जल्दी जल्दी करते थे, कौमा और जलसा इत्मीनान से ठहर ठहर कर नहीं करते थे, इसीलिये आपने हर मर्तबा उन से कहा कि फिर नमाज़ पढ़ो क्योकि तुमने नमाज़ पढ़ी ही नहीं आपने उन अर्कान की अदायगी मे इत्मीनान ना होने को नमाज़ के बातिल होने का सबब करार दिया है ।

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने सहाबा से पूछा शराबी,ज़ानी और चोर के मुतअल्लिक तुम्हारा क्या गुमान है (यानी उन का गुनाह कितना है) सहाबा ने कहा अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते है आप ने फरमाया कि यह अजीम गुनाह है और इसलिये इन की सज़ा भी बड़ी सख्त है और (कान खोल कर) सुनो बहुत बड़ी चोरी उस शख्स की है जो अपनी नमाज़ मे चोरी करता है सहाबा ने कहा वह किस तरह फरमाया जो नमाज़ मे रुकूअ और सजदा पूरा न करे वह नमाज़ मे चोरी करता है । **(मुअत्ता इमाम मालिक 1/167,इब्ने हिब्बान,सुनन कुबरा इसे हाकिम और ज़हबी ने सहीह कहा है)**

अल्लाहू अकबर कितना खौफ का मुकाम है हमारी उन नमाज़ो का क्या हाल होगा जो सुन्नत के तरीके से अदा नहीं की गई है हमें नमाज़ को पहली तकबीर से लेकर सलाम फेरने तक मस्नून तरीके से अदा करना चाहिये ।

हज़रत अबू बक्र रजि0 से रिवायत है उन्होने बयान किया कि मैं नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के साथ नमाज मे शामिल हुआ उस समय आप रुकूअ मे थे हजरत अबू बक्र रजि0 ने सफ मे पहुंचने से पहले ही

रूकूअ कर लिया और उसी हालत मे चल कर सफ में पहुंचे नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम को यह बात बताई गयी तो आपने फरमाया :– अल्लाह तेरा शौक पूरा करे, आईन्दा ऐसा न करना । **(बुखारी सिफतिस्सलात (अल अज़ान) हदीस नं0 783)**

मेहरबानी करके इसे तवज्जो से पढ़े

कुछ लोग इस हदीस से यह नुक्ता निकालते है कि अगर नमाज़ी रूकूअ की हालत मे इमाम के साथ शामिल हो तो उसे रकअत शुमार करेगा, क्योकि हज़रत अबू बक्र रजि0 ने रकअत नहीं दोहराई न ही आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने उन्हे ऐसा करने का हुक्म दिया । और इस से यह भी मालूम हुआ कि कियाम जरूरी है न फातिहा ।

यह ख्याल दुरूस्त नहीं है क्योकि :–

1 नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने उन्हे रकअत लौटाने का हुक्म दिया था या नहीं । या उन्होने खुद से रकअत को लौटाया था या नहीं । इस के बारे मे हदीस खामोश है । इस मसअले पर जो कुछ भी कहा जाता है व केवल ख्याल और गुमान की बुनियाद पर कहा जाता है ।

2 इस से उलट ऐसी मजबूत दलीले मौजूद है जो ताकत रखने वाले के लिये कियाम और फातिहा दोनो को लाज़िम करार देती है और

3 उसूल यह है कि जब शक शुब्हा के मुकाबले मे मजबूत दलील और शक आमने सामने आ जाये तो शक को छोड़ दिया जायेगा और यकीन पर अमल किया जायेगा ।

4 सीधी सी बात है कि इस हदीस का मर्कजी नुक्ता हज़रत अबू बक्र रजि0 का यह अमल है कि पहले वह रूकूअ की हालत मे इमाम के साथ शामिल हुये फिर इसी हालत मे आगे बढ़ते हुये सफ में दाखिल हुये । आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने उन्हे इसी अमल से रोका था । जमाअत मे शामिल होने का शौक अपनी जगह पर है । मगर इस शौक को पूरा करने का यह तरीका बहर हाल दुरूस्त और अच्छा न था

5 इसलिये इस हदीस को इस के अस्ल नुक्ते से हटा कर कियाम और फातिहा से खाली रकअत के जवाज़ पर लाना दुरूस्त मालूम नहीं होता । (रफीकी)

इस सिलसिले मे एक दलील यह भी सामने आयी है कि नमाज़ मे सूर फातिहा पढ़नें का मौका और स्थान चूंकि कियाम है इसलिये सिर्फ वहीं नमाज़ी सूर फातिहा पढ़ेगा जिस ने इमाम को कियाम की हालत मे पाया और जिस ने उसे रूकूअ की हालत मे पाया उस के हक में सूर फातिहा की किरात साकित हो जायेगी, क्योकि उस के लिये उस कि किरात का मौका और जगह बाकी नहीं रही । यह दलील भी दुरूस्त नहीं । अक्ल और नक्ल दोनो इस का इंकार करते है जैसे :–

1 इमाम बुखारी रह0 ने सहीह बुखारी किताबुल अजान मे एक बाब 95 यूं बांधा है नमाज मे सूर फातिहा पढ़ना हर नमाज़ी पर वाजिब है, चाहे इमाम हो या मुक्तदी, मुकीम हो या मुसाफिर, नमाज सिर्री हो या जहरी

2 नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिस ने नमाज मे सूर फातिहा नहीं पढ़ी उस की नमाज ही नहीं इस से मालूम हुआ कि अगर एक रकअत में भी सूर फातिहा रह जाये तो सारी नमाज़

नहीं होती, क्योकि सूर फातिहा पढ़ना नमाज का रूकन है और रूक्न किसी भी जगह पर रह जाये, नमाज़ नाकिस हो जाती है जैसा कि मुस्लिम शरीफ मे हज़रत अबू हुरैरा रजि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने तीन बार फरमाया जिसने नमाज मे सूर फातिहा नहीं पढ़ी उस की नमाज़ नाकिस और ना मुकम्मल है (बिल्कुल ऐसे जैसे एक हामला ऊंटनी समय से कुछ पहले अपना बच्चा गिरा दे(गर्भपात कर दे) तो वह किसी काम का नहीं होता । इसी को अरबी ज़बान मे खिदाज कहते है ।

इससे मालूम हुआ कि किसी शख्स ने एक रकअत मे सूर फातिहा नहीं पढ़ी उस की कम से कम वह रकअत तो अधूरी होगी । और यह तो मुमकिन ही नहीं कि किसी शख्स की एक रकअत तो अधूरी हो और बाकी नमाज़ मुकम्मल हो ।

3 हदीस ला सलाता ले मललम यकरा बे फातिहातुल किताब मे ला नफ़ी जिन्स का है जो इस बात पर दलालत करता है कि जिस रकअत मे सूर फातिहा नहीं पढ़ी गयी वह रकअत नमाज़ की जिन्स मे से नही है ।

4 नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया ला तुज़जिउ सलातुन ला युक़–रउ फ़ीहा बिफ़ाति बिल किताबि (इब्ने हिब्बान दारूकुतनी) इस हदीस मे ला तुजजिउ का मतलब है ला तकफी वला तसिहहु या नी जो शख्स नमाज मे सूर फातिहा नहीं पढ़ता उस की नमाज़ न तो सही होगी और न ही उसे किफायत करेगी । अब जिस रकअत मे सूर फातिहा नहीं पढ़ी गयी कम से कम वह रकअत तो सहीह न रही इसलिये उसे सहीह करने के लिये जरूरी है कि वह रकअत सूर फातिहा समेत दोबारा पढ़ी जाये ।

5 हदीस कुदसी है अल्लाल तआला ने फरमाया मै ने अपने और बंदे के दर्मियान नमाज को (आधा–आधा) बांट दिया है ––– । हदीस के मुताबिक यहां नमाज़ से मुराद सूर फातिहा है जिस का पहला आधा अल्लाह पाक की हम्द सना बुजुर्गी, बड़ाई, तौहीद और इबादत पर मुश्तमिल है, जबकि दूसरा आधा बंदे की दुआओ पर मुश्तमिल है । जब बंदा नमाज़ मे सूर फातिहा पढ़ रहा होता है अल्लाह तआला उन दुआओ के कुबूल करने का एलान फरमाते है । लेकिन जो नमाज़ी एक रकअत मे सूर फातिहा नहीं पढ़ता उस की वह रकअत अल्लाह के इस बड़े इनाम से खाली रहती है ।

6 तंदरूस्त और ताकत वर आदमी के लिये नमाज़ में कियाम करना जरूरी है । जिस तरह रूकूअ या सजदे के बिना नमाज़ नहीं होती, इसी तरह कियाम या फातिहा के बगैर भी उस की नमाज़ नहीं होती, इसीलिये यह कहना जुल्म है कि जिस ने इमाम को रूकूअ की हालत मे पाया उस के हक मे सूर फातिहा की किरात साकित हो जायेगी, क्योकि उस के लिये उसे किरात का मौका महल बाकी नहीं रहा इस के उलट यूं कहना चाहिये चूंकि उस शख्स की नमाज मे से दो अहम रूकन (कियाम – सूर फातिहा) रह गये है इसलिये उसे यह रकअत दो बारा पढ़नी चाहिये ।

7 हज़रत अबू बक्र रजि0 की हदीस मे ला तउद के जो अलफाज आये है उन के तीन मायने हो सकते है 1 एक तो वही यानी आइन्दा ऐसा न करना 2 ला तुइद यानी तुम रकअत न दोहराओ (तुम्हारी नमाज हो गयी) 3 ला तादु यानी दौड़ कर न आया करो

अब उसूले हदीस यह है कि जिस दलील मे कई तरह के माना लिये जा सकते हो, उस दलील को किसी खास मसअले के लिये दलील के तौर पर पेश करना दुरूस्त नहीं ।

इसलिये ठोस दलीलो को छोड़ कर कई अर्थ निकलने वाली दलील ला तउद से दलील पकड़ना सहीह नहीं है ।

8 नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम का मशहूर फर्मान है जो नमाज़ तू इमाम के साथ पा ले उसे उस के साथ पढ़ और जो रह जाये उस की कज़ा कर **(मुस्लिम किताबुल मसाजिद हदीस नं0 602)** तो जो शख्स एक रकअत का कियाम नहीं पा सका, ज़ाहिरी बात है कि उस रकअत को दो बारा पढ़े ।

9 नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया जो शख्स मुझे कियाम, रूकूअ या सजदे की हालत मे पाये वह उसी हालत मे मेरे साथ शामिल हो जाये **(फतहुल बारी किताबुल अजान 2/269)** इस से मालूम हुआ कि किसी मुक्तदी को जाइज नहीं कि वह इमाम की मुखालिफत करे, यानी इमाम तो रूकूअ कर रहा हो और मुक्तदी कियाम कर रहा हो ।

10 अल्लाह तआला ने फरमाया रसूल जो कुछ तुम्हे दे उसे ले लो (सूर हश्र -7) और नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया उसी तरह नमाज पढ़ो जैसे तुम ने मुझे पढ़ते देखा है **(बुखारी 6310, और यह बात सूरज की तरह रौशन है कि आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने ऐसी नमाज़ नहीं पढ़ी और न अपनी उम्मत को सिखाई है जिस की किसी रकअत मे कियाम और सूर फातिहा न हो ।**

ऊपर बयान किये गये दलाइल की रौशनी मे मालूम हुआ कि कियाम और सूर फातिहा के बिना नमाज़ नहीं होगी ।

कौमे का बयान

रूकूअ से सर उठाते हुए रफायदैन करते हुये सीधे खड़े हो जाये **(बुखारी मुस्लिम)** इस का तरीका वजाहत के साथ गुज़र चुका है ।

अगर आप इमाम है (या अकेले पढ़ रहे है) तो रूकूअ से कौमा मे जाते वक्त यह पढ़े

समि-अल्लाह-हुलेमन हमेदा

अल्लाह ने उस की सुन ली जिस ने उस की तारीफ की **(बुखारी 796, मुस्लिम 476)**

और अगर मुक्तदी है तो यह कहे :

रब्बना लकल हम्द कसीरन तय्यबन मुबारकन फीहे

ऐ हमारे रब तेरे ही वास्ते तारीफ है, बहुत ज्यादा पाकीज़ा और बरकत वाली तारीफ **(बुखारी 799)**

हज़रत रिफाआ बिन राफेअ रजि0 रिवायत करते है कि हम नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे तो आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने जब रूकूअ से सर उठाया तो फरमाया समि-अल्लाहु लि-मन हमि-दह फिर एक मुकतदी ने कहा -

रब्बना व-ल-कल हम्द हम-दन कसी-रन तय्यि-बन मुबारकन फीह

फिर जब आप नमाज़ से फारिग हुये तो फरमाया बोलने वाला कौन था (यानी यह दुआ किसने पढ़ी है) एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह के रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम मै था आपने फरमाया मैने तीस से भी ज्यादा फरिश्ते देखे जो इन कलिमों का सवाब लिखने मे जल्दी कर रहे थे ।

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम कौमे मे फरमाते

"اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءُ السَّمٰوٰتِ وَمِلْءُ الْاَرْضِ وَمِلْءُ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ
بَعْدُ اَللّٰهُمَّ طَهِّرْنِيْ بِالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَالْمَاءِ الْبَارِدِ، اَللّٰهُمَّ طَهِّرْنِيْ مِنَ الذُّنُوْبِ وَالْخَطَايَا
كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْوَسَخِ".

ऐ अल्लाह तेरे ही लिये सारी तारीफ है आसमानो और ज़मीन और हर उस चीज के भराव के बराबर जो तू चाहे ऐ अल्लाह मुझे बर्फ ओले और ठंडे पानी से पाक कर दे ऐ अल्लाह मुझे गुनाहों और खताओं से ऐसा पाक कर दे जिस तरह सफेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ किया जाता है ।

चेतावनी

बहुत से लोगो को कौमा का पता ही नहीं कि क्या होता है वाजेह रहे कि रुकूअ के बाद इतमिनान से सीधा खड़ा होने का नाम कौमा है । नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम रुकूअ से सर उठा कर सीधे खड़े हो कर बड़े इतमिनान से कौमे की दुआ पढ़ते थे ।

हज़रत बरा रजि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम का रुकूअ और सज्दा और दो सज्दो के दर्मियान बैठना और रुकूअ से उठ कर कौमा मे खड़ा होना बराबर होता था कियाम को छोड़ कर और इसी तरह तशहहुद बैठन को छोड़ कर । यानी यह चारो चीजे रुकूअ, सजदा, जलसा और कौमा लंबाई मे लगभग बराबर होती थी । **(बुखारी, 792, मुस्लिम हदीस नं0 471)**

कभी–कभी नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम का कौमा बहुत लंबा होता था । हज़रत अनस रजि0 कहते है नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम इस कदर लंबा कौमा करते कि कहने वाला कहता कि आप भूल गये है । **(मुस्लिम किताबुस्सलात 473, मगर आज मुसलमान लंबा कौमा करना तो दूर की बार पीठ सीधी करना भी पसंद नहीं करते, फौरन सजदे मे चले जाते है । अल्लाह हम सब को हिदायत दे । आमीन**

सजदे के अहकाम

हज़रत अबू हुरैरा रजि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया :– जब तुम मे से कोई सजदा करे तो ऊंट की तरह न बैठे बल्कि अपने दोनो हाथ घुटनो से पहले रखे । **(अबू दाऊद किताबुस्सलात 840, इमाम नौवी और ज़रकानी ने इस को जय्यिद कहा है)**

सजदा मे घुटने पहले रखने वाली वाइल बिन हुज्र रजि0 की रिवायत को (अबू दावूद 838) इमाम दारूकुतनी, बैहकी और इब्ने हजर रह0 ने जईफ कहा है । जब कि हज़रत अबू हुरैरा रजि0 की हाथ रखने वाली रिवायत सहीह है और हज़रत इब्ने उमर की नीचे वाली हदीस इस पर शाहिद है । इमाम नाफे रह0 रिवायत करते है कि इब्ने उमर रजि0 अपने हाथ घुटनो से पहले रखते थे ।

घुटनो से पहले हाथ रखने को इमाम औज़ाई, मालिक, अहमद हंबल और शेख अहमद शाकिर रह0 वगैरह ने इख्तियार किया है । इब्ने अबू दाऊद ने कहा कि मेरा ख्याल इब्ने उमर रजि0 की हदीस की तरफ है क्योकि इस बारे सहाबा और ताबेईन से बहुत सी रिवायते है ।

1 सजदे मे पेशानी और नाक जमीन पर टिकाये **(बुखारी 8123, मुस्लिम 490)**

2 सज्दे मे दोनो हाथों को कंधो के बराबर रखे । **(अबू दावूद 734, तिर्मिजी ने सहीह कहा)**

3 सजदे मे दोनो हाथो को कानो के बराबर रखना भी दुरूस्त है । **(अबू दावूद 726, इब्ने हिब्बान ने सहीह कहा है)**

4 सजदे मे हाथ की उंगलियां एक दूसरे से मिला कर रखे । और उन्हे किबला की तरफ रखे । हाकिम **1/227, हाकिम और ज़हबी ने इसे सहीह कहा है)**

5 सजदे मे दोनो हथेलियां और दोनो घुटने खूब जमीन पर टिकाए । **(अबू दावूद 859, इब्ने खुजैमा ने सहीह कहा है)**

6 नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया उस शख्स की नमाज नहीं जिस की नाक पेशानी की तरह ज़मीन पर नहीं लगती । **(दारूकुतनी हाकिम और इब्ने जौज़ी ने सहीह कहा)**

7 पांव की उंगलियों के सिरे किब्ला की तरफ मुड़े हुये रखे । और कदम भी दोनो खड़े रखे । **(बुखारी हदीस नं0 828)**

8 एड़ियो को मिलाएं । **(बैहकी 2/116 इब्ने खुजैमा, हाकिम और ज़हबी ने सहीह कहा है)**

9 सजदे की हालीत मे नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम अपनी कलाईयों को ज़मीन पर नहीं लगाते थे, बल्कि उन्हे उठा कर रखते और पहलुओं से दूर रखते, यहां तक कि पिछली जानिब से दोनो बगलों की सफेदी नज़र आती थी । **(बुखारी 822,मुस्लिम 493)**

सजदे की दुआये

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया :-

खबरदार मै रूकूअ और सजदे मे कुरआन पढ़ने से मना किया गया हूं, इसलिये तुम रूकूअ मे अपने रब की बड़ाई बयान करो और सजदे मे खूब दआ मांगो, तुम्हारी दुआ मकबूल होने के लायक होगी । **(मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस नं0 479)**

हज़रत इब्ने मसऊद रजि0 रिवायत करते है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया :-

जिसने सजदे मे तीन मर्तबा सुब्हा-न रब्बियल आला पढ़ा उसने सजदा पूरा किया मगर यह मामूली दर्जा है । **(बज्ज़ार तबरानी यह रिवायत हसन है)**

हज़रत आयशा रजि0 रिवायत करती है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम अपने रूकूअ और सज्दे मे यह कहते थे :–

"سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللّٰهُمَّ اغْفِرْلِي"

"سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوْحِ"

सुब्हान कल्ला हुम्मा रब्बना व बेहम्देका–ला हुम्मग फिरली

सुब्बूहून कुद्दूस रब्बुल मलाईकति वर्रुह

तर्जुमा :– ऐ हमारे पालन हार अल्लाह तू पाक है हम तेरी तारीफ करते है ऐ मेरे मौला मुझे बख्श दे। फरिश्तो और रूह (जिब्रील) का रब निहायत पाक है। **(मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस नं0 487, अबू दाऊद हदीस नं0 872)**

जलसा (दो सजदो के दर्मियान बैठना)

हज़रत अबू हुमैद साअदी रजि0 से रिवायत है कि

फिर नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम सजदे से अपना सर उठाते, और अपना बायां पांव मोड़ते (यानी बिछाते) फिर उस पर बैठते, और सीधे होते यहां तक कि हर हड्डी अपने ठिकाने पर आ जाती (यानी पहले सजदे से सर उठा कर निहायत आराम और इत्मीनान से बैठ जाते और दुआऐं जो आगे आ रही है पढ़ कर) फिर दूसरा सजदा करते। **(अबू दाऊद 730, तिर्मिज 304, इब्ने माजा 1060, इमाम नौवी और तिर्मिजी ने सहीह कहा है।)**

आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम का मामूल था कि बैठते वक्त अपना दायां पाव खड़ा कर लेते। **(बुखारी 828)**

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम खुद बड़े इत्मीनान से जलसे मे बैठते इसके अलावा न बैठने वाले की नमाज़ की नफी फरमायी है लेकिन बड़े अफसोस की बात है कि आम लोगो को जलसे का पता ही नहीं है वह क्या होता है जलसा नमाज मे फर्ज है मगर फिरके (मसलक) के तास्सुब मे उम्मत को अंधेरे कुंए की तरफ हांक दिया गया (इन्नल लाहा व इन्ना अलैहि राजेऊन) और इस मे इत्मीनान और सकून भी फर्ज है नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम का जलसा सजदे के बराबर होता था। **(बुखारी 820, मुस्लिम 471)**

कभी कभी ज्यादा देर तक बैठते यहां तक कि बाज़ लोग कहते कि आप दूसरा सज्दा करना भूल गये **(बुखारी सिफतिस्सलात 821, मुस्लिम किताबुस्सलात 472)**

जलसे की मसनून दुआये

हज़रत इब्ने अब्बास रजि0 रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम दोनो सजदो के दर्मियान यह दुआ पढ़ते :-

"اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِي وَعَافِنِيْ وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِيْ".

अल्ला-हुम्मग फिर ली व-रह-हमनी व-आफिनी व-दीनी व-रूज़-कनी

तर्जुमा :- एक अल्लाह मुझे बख्श दे, मुझ पर रहम फरमा मुझे हिदायत दे, मुझे अमन और चैन से रख और मुझे रोज़ी अता कर । **(अबू दाऊद किताबुस्सलता 850, तिर्मिजी 284, इसे हाकिम, जहबी और नौवी ने सहीह कहा है)**

फिर इसके बाद दूसर सजदा करे इतमीनान से ।

जलसा-ए-इस्तराहत

दुसरा सजदा कर चुकने के बाद एक रकअत पूरी हो चुकी है । अब दूसरी रकअत के लिये आप को उठना है, लेकिन उठने से पहले जलसा ए इस्तराहत मे ज़रा बैठ कर उठे इस की सूरत यह है नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम अल्लाहु अकबर कहते हुए दूसरे सजदे से उठते, और अपना बांया पांव मोड़ते हुये (बिछाते और) उस पर बैठते फिर दूसरी रकअत के लिये खड़े होते । **(अबू दाऊद किताबुस्सलात 730,दार्मी 1358, तिर्मिजी 304, इब्ने माजा 1061 इसे नौवी तिर्मिजी और इब्ने कय्यिम ने सहीह कहा है)**

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम अपनी नमाज़ की ताक (यानी पहली और तीसरी) रकअत के बाद खड़े होने से पहले सीधे बैठते थे । **(बुखारी सिफतिस्सलात हदीस नं0 823)**

जलसा ए इस्तराहत से उठते समय दोनो हाथ जमीन पर टेक कर उठे । **(बुखारी सिफतिस्सलात 824)**

तवज्जो दे

एक इख्तिलाफी रिवायत मे जलसा ए इस्तराहत से कियाम के लिये उठते समय हाथो को आटा गूंधने वाली कैफियत के साथ ज़मीन पर टेकने का जिक्र है । इस से कुछ उलमा ने यह दलील पकड़ी है कि बंद मुट्ठियों को ज़मीन पर टेक कर उठना मुस्तहब है और कुछ ले हाथ खोल कर जमीन पर टिका कर उठना यह दलील पकड़ी । अगर यह हदीस सहीह है तो दोनो तरह से मुस्तहब है क्योकि आटा गूंधते समय हाथ खोले भी जाते है बंद भी किये जाते है इसलिये नमाज़ी जिस मे सहूलत महसूस करे अमल कर ले ।

तशह्हूद

जब नमाज़ी दूसरी रकअत के बाद बैठे इसे कादा ए ऊला (पहला कादा) भी कहते है बायां पावं बिछा कर उस बैठ जाये और दायां पावं खड़ा रखे । **(बुखारी किताबुल अज़ान 827, 828)**

दाये हाथ को अपने दाये और बाये हाथ को बायें घुटने पर रखे । **(मुस्लिम 579)**
और पढ़े :–

"اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ
وَبَرَكَاتُهُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ، اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ".

मेरी सारी कौली बदनी और माली इबादत सिर्फ अल्लाह के लिये खास है ऐ नबी आप पर अल्लाह की रहमत, सलामती और बर्कते हो, हम पर और अल्लाह के दूसरे नेक बन्दो पर भी सलामती हो । मै गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा और कोई माबूद नहीं है और मै गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम अल्लाह के बंदे और रसूल है । **(बुखारी 831, 835, मुस्लिम 402)**

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि0 बयान करते है कि जब तक नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम हमारे दर्मियान मौजूद रहे हम अस्सलामु अलैक अय्यो हन नबीयो कहते रहे, जब आप वफात पा गये तो हम ने खिताब का अंदाज छोड़ कर गायब का अंदाज अपनाना शुरू कर दिया, यानी अस्सलामु अ–लन्नबिय्यि पढ़ते थे । **(बुखारी 6265)**

पहले जुमले का मतलब है ने नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम आप पर सलामती हो दूसरे का मतलब है नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम पर सलामती हो फिर भी बाद मे दोबारा अस्सलामु अलैक अय्यु हन्न बिय्यु पढ़ा जाने लगा । इस से मालूम हुआ कि सहाबा रजि0 नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम को आलिमुलगैब या हाजिर नाजिर नहीं समझते थे, वर्ना वह एक दिन के लिये भी अलैक अय्यु हन्नबिय्यु की जगह पर अ–लन्नबिय्यि न पढ़ते । सहाबा की पैरवी मे आज तक के मुसलमान इन्ही लफ़ज़ो मे तशह्हुद पढ़ते चले आये है, इसलिये नहीं कि नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम हर नमाज़ी के पास ह़ाजिर ऩाजिर होते है, बल्कि इसलिये कि यह सुन्नत पर अमल करने का तकाजा है और अल्लाह तआला ने अपने बन्दो का दुरूद सलाम अपने हबीब सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम तक पहुंचाने का इंतिज़ाम किया हुआ है **(अबू दाऊद किताबुल मनासिक, हदीस नं0 2041, 2042)** तो जिस तरह हम अपने खतो मे खिताब के साथ एक दूसरे को सलाम भेजते है, इसी तरह हमारा सलाम भी अल्लाह तआला उन तक पंहुचा देते है । मतलब यह कि तशह्हुद के अलफाज अलै–क अय्यु–हन्नबिय्यु से शिर्क का अकीदा (यानी आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम हाजिर नाजिर है, गैब जानने वाले है) की बिल्कुल ताईद नहीं होती अल्हम्दुलिल्लाह (रफीकी)

उंगली उठाने का मसअला

तशह्हुद मे उंगली उठाना नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की बड़ी बरकत और अज़मत वाली सुन्नत है । इस का सुबूत नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की सुन्नत मे देखे

हज़रत इब्ने उमर रजि0 कहते है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम जब नमाज के कादा मे बैठते तो अपने दोनो हाथ अपने दोनो घुटनों पर रखते और अपनी दाहिनी उंगली जो अंगूठे के नज़दीक है उठा लेते, पस इस के साथ दुआ मांगते । **(सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद 580)**

पस इस के साथ दुआ मांगते इस का मतलब यह है कि शहादत की उंगली के साथ इशारा फरमाते । जिस तरह की बाद मे आने वाली रिवायतों मे इस की वज़ाहद मौजूद है ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि0 रिवायत करते हैं कि नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम जब नमाज़ तशह्हुद पढ़ने बैठते तो आप दायां हाथ दायी रान पर और बायां हाथ बायी रान पर रखते और शहादत की उंगली के साथ इशारा करते और अपना अंगूठा अपनी दर्मियानी उंगली पर रखते । **(मुस्लिम किताबुल मसाजिद 579)**

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम दायें हाथ की उंगलियों को बंद कर लेते, अंगूठे के साथ वाली उंगली को किब्ला रूख कर के उस के साथ इशारा करते । **(मुस्लिम किताबुल मसाजिद 580)**

हज़रत वाइल बिन हुज्र रजि0 रिवायत करते है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम दूसरे सजदे से उठ कर कादा मे बैठे दो उंगलियो को बंद किया (यानी अंगूठे और बीच और बड़ी उंगली से घेरा बनाया) और कलिमे की उंगली से इशारा किया । **(अबू दाऊद 726, इसे इब्ने हिब्बान इब्ने खुजैमा ने सहीह कहा है)**

हजरत वाइल बिन हुज्र रजि0 फरमाते है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने उंगली उठाई और उसे हिलाते थे । **(नसई हदीस नं0 990 इसे हिब्बान और इब्ने खुजैमा ने सहीह कहा है ।)**

तशह्हुद मे शहादत की उंगली में थोड़ा सा झुकाव होना चाहिये । **(अबू दाऊद 991, इब्ने हिब्बान इब्ने खुजैमा ने सहीह कहा है)**

शेख अलबानी रह0 लिखते है उंगली न हिलाने वाली हदीस शाज़ या मुन्कर है इसलिये इसे वाइल रजि0 की हदीस के मुकाबले मे लाना जाइज़ नहीं ।

नोट :– सिर्फ लाइला–ह इल्लल्लाहू कहने पर उंगली उठाना और कहने के बाद रख देना किसी रिवायत से साबित नहीं है ।

तशह्हुद के कादा से तीसरी रकअत के लिये खड़े हो तो अल्लाहू अकबर कहते हुये उठे और रफायदैन करे हज़रत इब्ने उमर रजि0 की रिवायत मे है कि जब नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम दो रकअत पढ़ कर तशह्हुद के बाद खड़े होते तो अल्लाहु अकबर कहते और दोनो हाथो को उठाते । **(बुखारी सिफतिस्सलात हदीस नं0 739)**

आखिरी तशह्हुद (तवर्रूक)

इस आखिरी कादे मे नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम यूं बैठते थे जैसा कि हज़रत अबू हुमैद साअदी रजि0 बयान करते है कि जब वह सजदा आता जिस के बाद सलाम है (यानी जब आखिरी रकअत का दूसरा सजदा कर के फारिग होते और तशह्हुद वगैरह के लिये बैठते) तो अपना बायां पांव (दायीं पिंडली के नीचे से बाहर) निकालते और अपनी बायीं ओर के कुल्हे पर बैठते । फिर (तशह्हुद, दुरूद और दुआ पढ़ कर) सलाम फेरते । **(अबू दाऊद हदीस नं0 730 इमाम इब्ने हिब्बान और इमाम नौवी ने इसे सहीह कहा है)**

बायीं ओर के कुल्हे पर बैठना त–वर्रूक कहलाता है, यह सुन्नत है, हर मुसलमान को आखिरी कादे मे तवर्रूक जरूर करना चाहिये । कितने अफसोस की बात है कि हमारी औरते तो आखिरी तशह्हुद मे तवर्रूक करे और मर्द इस सुन्नत से दूर रहे ।

जब आप इस कादे मे बैठे तो पहले अत्तहिय्यात पढ़े जिस तरह दूसरी रकअत पढ़ कर आप ने कादे मे पढ़ी थी और उंगली भी बराबर हिलाते रहे । अत्तहिय्यात खत्म कर के ये दरूद शरीफ पढ़े

"اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ
إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ
عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ".

ऐ मेरे मौला रहमत नाज़िल फरमा मुहम्मद और आले मुहम्मद सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम पर जिस तरह तुने रहमत नाज़िल फरमायी इब्राहिम और आले इब्राहिम अलै0 पर बेशक तू तारीफ वाला और बुजुर्गी वाला है । ऐ मेरे मौला बर्कत नाज़िल फरमा मुहम्मद सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम और आले मुहम्मद पर जिस तरह तू ने बर्कत नाज़िल फरमाई इब्राहिम अलै0 और आले इब्राहिम पर, बेशक तू तारीफ वाला और बुजुर्गी वाला है । **(बुखारी किताबुल अंबिया हदीस नं0 3370)**

हज़रत अबू बक्र रजि0 रिवायत करते है कि मैने कहा ऐ अल्लाह के रसूल नमाज मे मांगने के लिये मुझे कोई दुआ सिखाइये (जिसे अत्ताहिय्यात और दुरूद के बाद पढ़ा करूं) आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया पढ़ो :–

"اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْ لِىْ مَغْفِرَةً
مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِىْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ".

ऐ मौला बेशक मैने अपनी जान पर बहुत अधिक जुल्म किया है, और तेरे अलावा गुनाहों को कोई नहीं बख्श सकता, पस अपनी तरफ से मुझ को बख्श दे और मुझ पर रहम कर बेशक तू ही बख्शने वाला मेहरबान है । **(बुखारी सिफतिस्सलात हदीस नं0 834, मुस्लिम किताबुदुआ हदीस नं0 2705)**

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया तशह्हुद मे चार चीज़ो से अल्लाह की पनाह जरूर पकड़ो :–

"اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ
وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ".

ऐ मेरे मौला तेरी पनाह मे आता हू कब्र के अज़ाब से, और तेरी पनाह मे आता हूं दज्जाल के फितने से, और पनाह मे आता हूं मौत–हयात के फितने से । मेरे मौला मैं गुनाह से और कर्ज से तेरी पनाह मांगता हूं । **(बुखारी सिफतिस्सलात हदीस नं0 832, मुस्लिम किताबुल मसाजिद हदीस नं0 589)**

दरूद शरीफ के बाद बेहतर है कि दोनो दुआए पढ़ ली जाये ताकि दोनो हदीसो पर अमल हो जाये ।

सलाम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि0 रिवायत करते है अल्लाह के रसूल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम अपने दाये तरफ सलाम फेरते (तो कहते) अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि और बांये तरफ सलाम फेरते तो कहते अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि । **(अबू दाऊद 997 तिर्मिजी 295, इमाम तिर्मिजी और इब्ने हिब्बान ने सहीह कहा है)**

तो ये था सहीह अहादीस की रौशनी मे नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की नमाज जिसे सारे मुसलमानो को इस तरह नमाज पढ़ने का हुक्म है ।

फर्ज नमाज़ के बाद की इज्तेमाई दुआ

फर्ज नमाज के बाद सामूहिक दुआ के सबूत में कोई मकबूल हदीस नहीं है । बड़ी हैरानी की बात है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम मदीना मे दस साल तक रहे, पांचो वक्त की नमाज़े पढ़ाई सहाबा की बड़ी तादाद ने आप के पीछे नमाजे पढ़ी मगर उन मे से कोई एक भी इज्तेमाई दुआ का जिक्र न करे, तो यह उस के बातिल होने की मजबूत दलील है ।

हां कोई फर्ज नमाज़ के बाद अपने तौर पर इन्फेरादी दुआ मांग ले तो कोई हर्ज नहीं ।

इमाम इब्ने तैमिया, इब्ने कय्यिम इब्ने हजर रह0 और बहुत से तहकीक करने वाले उलमा ने फर्ज नमाज के बाद आजकल की राइज इज्तेमाई दुआ का इंकार किया है और इसे बिदअत कहा है ।

नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया –

मेरी उम्मत मे ऐसे लोग पैदा होगे जो पानी के इस्तेमाल मे और दुआए करने मे हद से आगे बढ़ेगे । **(अबू दाऊद 1480 इमाम हाकिम और इमाम ज़हबी ने इसे सहीह कहा है)**

ऐ अल्लाह लोगो को हिदायत दे दे की वे रसुले अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की मुखालेफत न करे । आमीन

व आखरुद्–दावानि–वह–हम्दुलिलाहे रब्बिल–आलेमीन

इस्लामिक दावाअ सेन्टर
रायपुर छत्तीसगढ़